International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)

E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

अमरकांत रचित उपन्यास 'कटीली राह के फूल में शिक्षा जगत की विसंगतियों का यथार्थ चिंतन

डॉ. पविता यादव

हिन्दी विभाग, राजकीय महाविधालय महेंद्रगढ़

सार

साहित्यकार हर विद्या में समाज और व्यक्ति के अंतर्संबंध का चिंतन करता है, वे विधाएं हैं - कविता, कहानी, उपन्यास, निबन्ध, जीवनी, संस्मरण, रेखाचित्र आदि, लेकिन उपन्यास विधा अत्याधिक सशक्त व श्रेष्ठ विधा है, जो जीवन के अधिक निकट है। उपन्यास के माध्यम से साहित्यकार अपने जीवन व समाज में हो रहे परिवर्तन को खुल कर वर्णन करके उसको रोचक करके विस्तार से व्यक्त करता है। सुप्रसिद्ध उपन्यासकार अमरकांत का उपन्यास 'कटीली राह के फूल' शिक्षा जगत की यथा तथ्य स्थितियों पर आधारित है।

संकेत शब्द : अनुशासनहीनता ,स्वतन्त्रता, संवैधानिक

परिचय

इस औपन्यासिक रचना में शिक्षाधाम प्रबन्धन की विसंगतियां देखने को मिलती हैं यथा :-

कठोर अनुशासन :

भारतीय सरकार हर व्यक्ति को शिक्षित करना चाहती है। उसी के साथ शिक्षा ग्रहण करने के कुछ कड़े नियमों को भी बना देती है जिसके रहते सभी को कड़े नियमों में ही रहकर शिक्षा ग्रहण करनी होगी। अमरकांत जी अपने उपन्यास 'कटींली राह के फूल' में अपने एक पात्र धीरेन्द्र के माध्यम से अनुशासनहीनता के बारे में कहते हैं कि मुझको कोई अनुशासन में बांध नहीं सकता। मैं चिड़िया की तरह आजाद रहना चाहता हूँ। किसी की गुलामी मैं नहीं कर सकता। स्वतन्त्रता हर जीव को पसंद है। वह उस कार्य में स्वतन्त्रता की कामना करता है। शिक्षा क्षेत्र हो या फिर खेल का, घर का वातावरण हो या फिर स्कूल/कॉलेज का हर प्रकार के क्षेत्र में स्वतन्त्रता चाहते हैं। क्योंकि कड़ा अनुशासन मानसिक रोगों को पैदा करता है।

'शिक्षा का अधिकार' नियम एक संवैधानिक एवम् मौलिक अधिकार है, जो प्रत्येक नागरिक के लिए अनिवार्य है। शिक्षा ज्ञात से अज्ञात की ओर सरल से कविता की ओर, मूर्त से अमूर्त की ओर चलती है, ऐसा हम प्रतिदिन पढ़ते हैं। प्राचीन शिक्षा गुरूकुलों/मंदिरों, मठां, मस्जिदों, आश्रमों आदि में दी जाती थी, जहां का वातावरण शिक्षण के अनुकूल होता था, लेकिन वहां कुछ कड़े नियम भी होते थे परन्तु प्राचीन समय में शिक्षार्थी ऐसे नियमों का पालन करते थे। आधुनिक समय में हम इस प्रकार के कठोर शासन को सुचारू रूप से नहीं लागू कर सकते क्योंकि आधुनिक छात्र कठोर अनुशासन उनके सर्वांगीण विकास में बाधक है।

शिक्षा में एकाग्रता का अभाव :

आधुनिक पाठ्यक्रम छात्रों के अनुकूल नहीं है क्योंकि यह पाठ्यक्रम ज्ञानपर अधिक आधारित है। वर्तमान आधुनिक शिक्षा को बाल केन्द्रित माना जाता है। परन्तु पाठ्यक्रम छात्रों की रूचि के अनुकूल न होने के कारण बाल केन्द्रित नहीं हो पाता। पाठ्यक्रम में अरूचि होने के कारण बच्चा/छात्र तल्लीनता से उनका अध्ययन नहीं कर पाता। इन्हीं के कारण छात्रों में एकाग्रता का अभाव पाया जाता है जिसके कारण शिक्षार्थी अनुशासनहीन हो जाता है। एकाग्रता के अभाव में छात्र कक्षा में शारीरिक रूप से तो उपस्थित रहता है लेकिन मानसिक रूप से अनुपस्थित । इस तरह की स्थिति गंभीर है। उपन्यास 'कटीली राह के फूल' में

नीरस, अरूचिकर, बोझिल पाठ्यक्रम से विमुख छात्रों के बारे में बताते हुए उपन्यासकार ने निम्न प्रकार से लिखा है मैं तो यार मेहनत भी करता हूँ, लेकिन मेरा दिमाग ही ऐसा है। हाँ..... कभी मुझे मोटी और कठिन किताब पढ़ने से नींद अवश्य आ जाती है। मुझसे कम तो यह कामिनी पढ़ती है..... क्यों कामिनी?

छात्रों के सामने जटिल पाठ्यक्रम उनको एकाग्र होने में बाधा का कार्य करती है। जब तक छात्र एकाग्रता से अध्ययनरत नहीं होंगे शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त कर पाना मुश्किल ही नहीं नामुम्किन है। छात्रों को शिक्षा के प्रति जागरूक करके उन विषयों में परिवर्तन करके व अध्ययन विधियों को परिवर्तित करके उनको अपने विषय के प्रति सजग किया जा सकता है।

शिक्षा संस्थानों का दूर होना :

शिक्षण संस्थान घर के जितने नजदीक होगें शिक्षा के प्रति लगाव उतना ही बढ़ेगा। सरकार द्वारा शिक्षण संस्थानों को अनुमति दी गई है लेकिन बहुत से शिक्षण धाम आवासीय स्थानों से बहुत दूर हैं जिसका प्रभाव छात्राओं पर अधिक पड़ता है। छात्राऐं अपने घर से दूर जाने में संकोच करती हैं। माता-पिता भी अपने बच्चों को दूर भेजने में हिच-हिचाते हैं। शिक्षा ग्रहण करने में आने वाली कठिनाइयां के कारण शिक्षा ग्रहण करने के प्रति अलगाव पैदा होता है।

बहुत से शिक्षण संस्थानों में आवासीय संस्थान न होने के कारण और शहरों व दूरदराज के अजनबी माहोल में रह पाना आसान नहीं होता। उनमें अनेक समस्याए आती हैं। खाने की समस्या, वातावरण प्रतिकूल न होना, वहां के लोगों का व्यवहार परिवर्तन आदि उपन्यास के पात्र अनूप कुमार भी शिक्षार्थ शहर में जाता है और अनेक समस्याओं का सामना करता है। अनूप कुमार के शब्दों में मैं दूसरे दिन वहाँ से हट गया। स्टेशन के पास एक होटल था। उसमें एक अच्छा कमर मिल गया। वह होटल एक बड़े अहाते की झाड़ी से घिरा था।

शिक्षा के रास्ते में अनेक बाधाए आ जाने के कारण शिक्षार्थी का मन शिक्षा से हट ही जाता है।

शिक्षा पर पाश्चात्य प्रभाव :

जब दो भिन्न संस्कृतियाँ का आपस में मिलती हैं तो वे एक दूसरे पर प्रभाव डालती हैं। उसी प्रकार जब विश्व में एक देश दूसरे देश के साथ शिक्षा का विनिमय करते हैं तो एक दूसरे देश के लोगों को प्रभावित करती है। उसी तरह से भारतीय शिक्षा पर पाश्चात्य शिक्षा का प्रभाव बलवती दिखलाई देता है। शिक्षा के जो भी परिवर्तन या सुधार आधुनिक समय में सरकार द्वारा लागू किये गये हो काफी हद तक पाश्चात्य शिक्षा से अनुप्रेरित दिखलाई पड़ते हैं। छात्र भी शिक्षा के चकाचौंध से इतने चकित हो जाते हैं कि अपने भविष्य को देखने में असमर्थ हो जाते हैं । उपन्यास में भी पाश्चात्य शिक्षा बारे में निम्न कहा गया है:-

सिर्फ मजबूरी है। पश्चिमी देश विज्ञान की तरक्की करके युद्ध और विनाश फैलाते हैं, जबकि हमारे देश के गांधीवादी लोग विज्ञान की तरक्की के विरूद्ध है। क्या यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि जहां कल, शिक्षा और विज्ञान की तरक्की हुई है, वे देश बहुत ही सभ्य हैं? बहुत-सी वन्य-जातियाँ पिछड़ी हुई हैं, लेकिन उनका नैतिक स्तर कहीं अधिक ऊँचा है।

शिक्षा का उद्देश्य केवल नैतिक स्तर हो तो शिक्षा शिक्षा कहलाती है अन्यथा वह विनाश का कार्य करती है। शिक्षा का लक्ष्य केवल कल्याणकारी होना चाहिए नाकी विनाशकारी।

स्पष्ट है कि शिक्षा के क्षेत्र में बहुत सारी विसंगतियाँ देखने को मिलती हैं। सरकार व शिक्षा अधिकार शिक्षण संस्थानों को मान्यता देते समय जो नियम व शर्तें लागू करते हैं। अधिकतर शिक्षण संस्थान उन शर्तों पर खरा उतरते ही नहीं। लेकिन वे शिक्षण संस्थान जैसे-तैसे मान्यता लेकर अपना व्यवसाय चलाते हैं। ऐसे शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थी वर्ग के भविष्य के साथ खिलवाड़ किया जाता है।

बहुत से शिक्षण संस्थानों में अध्यापक वर्ग की कमी, फर्नीचर की कमी, पुस्तकालयों व खेल के मैदान की कमी देखने को मिलती है। शिक्षण संस्थानों की स्थापना वहां की जाती है जहां से आमवर्ग को पहुंच पाना नामुम्किन होता है। छात्राओं की तो वहाँ दाखिला दिलवाने की भी नहीं सोच सकते।

शिक्षण संस्थानों का वातावरण ऐसा हो गया है कि वहां पर शिक्षा ग्रहण कर पाना बहुत मुश्किल है। आऐ दिन कभी चुनावों का माहोल तो कभी शिक्षण संस्थानों में हड़ताल। अधिकतर शिक्षण संस्थानों में तो हड़तालें बहुत लम्बे समय तक चलती रहती हैं। ऐसे वातावरण में कौन विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर सकता है।

निष्कर्ष :

'कटीली राह के फूल' उपन्यास एक तरफ जहां विद्यार्थी जीवन पर आधारित है तो दूसरी तरफ शिक्षा जगत की विसंगतियों को उजागर करने में समर्थ हुआ है। इनके साथ-साथ विद्यार्थी वर्ग के सामने नवीन मूल्यों की प्रतिस्थापना आशान्वित भी करता है। उपन्यासकार की पुरजोर कोशिश रही कि पाठक के हृदय में नैतिक मूल्यों का रोपण कर सके। उपन्यासकार जीवन के लगभग सभी पहलुओं से भली भांति परिचित है। वर्तमान शिक्षा जगत की विसंगतियां उपन्यासकार का चिंतन मनन पर विवश करती है।

सन्दर्भ-ग्रंथ सूची

1. डॉ. आत्माराम — इक्कीसवीं सदी में शिक्षा अखिल भारती, 3014 चर्खेवालान, दिल्ली-110006
2. गोपाल कृष्ण अग्रवाल — मानव समाज, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. गोपाल कृष्ण अग्रवाल — सामाजिक विघटन, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 1972
4. जी.आर. मदान — समाज शास्त्र के सिद्धान्त सरस्वती सदन, 7 यू.ए. नगर, दिल्ली-1969
5. डॉ. डी.एल. शर्मा — शिक्षा तथा भारतीय समाज सूर्य पब्लिकेशन बध्व आर लाल बुक डिपो सप्तम संशोधित संस्करण-2007 (निकट गवर्नमेण्ट कॉलेज), मेरठ-250001
6. एन.आर.स्वरूप सक्सेना, — उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा शिखा चतुर्वेदी सूर्य पब्लिकेशन, नवीन संस्करण 2006 निकट गवर्नमेन्ट इण्टर कॉलेज मेरठ-250001
7. एम.एम. लबानिया, — सैद्धान्तिक समाज शास्त्र शशि के. जैन रिसर्च पब्लिकेशन्स, त्रिपोलिया बाजार जयपुर-2
8. बी.डी. गुप्ता — ग्रामीण समाज शास्त्र सीता प्रकाशन, हाथरस, 1980
9. रवीन्द्रनाथ मुकर्जी — समाज शास्त्र के सिद्धान्त सरस्वती सदन, मसूरी, प्रथम संस्करण 1965